Sem. 2, MJ-3

मोचीराम कविता की समीक्षा

समकालीन कविता के शीर्षस्थ कवि सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' की प्रसिद्ध कविता 'मोचीराम' आम आदमी, दलितों-पीड़ितों-शोषितों की संवेदना को उकेरनेवाली है। समाज में परंपरागत व्यवसाय से रोटी पाने के लिए ऐसे कई हैं, जो अच्छे-बुरे की पहचान का अनुभव रखते हैं। इनकी दृष्टि से समाज के हर वर्ग की वास्तविकता छिपी नहीं रहती। धूमिल ने समाज के इस दबे-कुचले आम आदमी की पीड़ा, घुटन, आक्रोश, दबाव और शोषण का बेबाकी से चित्रण किया है।

'मोचीराम' कविता संवादात्मक शैली में लिखी गयी है। कवि एक मोची के पास जाता है और संवाद करता है। मोची उनसे कहता है - "मेरी निगाह में/ न कोई छोटा है/ न कोई बड़ा है।" इस कविता में कवि की मूल संवेदना - समानता, सजगता और अनुभवी दृष्टि दीखती है। जिस आम आदमी का जूता पहनने लायक नहीं होता, उसे मोची बड़े प्यार से जूते को फेंकने की सलाह देता है। मोची की इस ईमानदार सलाह से कवि सोचता है कि बार-बार की मरम्मती से मोची को लाभ ही होगा, किन्तु, सामनेवाले का लाभ सोचना उसकी सच्ची दृष्टि का प्रमाण है। मोची जूता की चकत्तियों को टांकता है और कवि अपनी आँखों को; क्योंकि कवि के अभाव, गरीबी, पीड़ा और दुख के आँसू कहीं मोची के सामने न गिर पड़े। कवि का यह आँखों के टाँके मारना वास्तव में स्वतंत्रता के बाद के मोहभंग की स्थिति है। -

"एक जूता और है जिससे पैर को/ बांधकर एक आदमी निकलता है/ सैर को/ न वह अक्लमंद है/ न वक्त का पाबंद है/ उसकी आँखों में लालच है/ हाथों में घड़ी है/ उसे जाना कहीं नहीं है/ मगर चेहरे पर/ बड़ी हड़बड़ी है/ वह कोई बनिया है।"

कवि ने पूँजीपति, व्यवसायी व्यक्तियों को लालची और घमंडी पाता है। उसे 'हिटलर का नाती' कहना कवि की आक्रामकता प्रकट करता है। इसीलिए कवि रामनामी बेचकर या रंडियों की दलाली कर अपने पेट भरने को एक ही कहता है। मोची के मुख से ऐसी बातें सुनकर कवि को उसमें 'शायर' नजर आता। उसके भाव और भाषा में कवि परंपरा, सभ्यता, सुरुचि, शालीनता और भद्रता का विरोध पाता है, उसमें पीड़ा और आक्रोश एवं मूल्यहीनता का विरोध भी है।

कविता के अंत में कवि ने शब्दों के पीछे की 'चीख' और 'चुप्पी' को व्यक्त किया है, जो भविष्य को गढ़ने में एक-सी भूमिका निभाते हैं। मोचीराम से शुरू करते हुए कवि ने कविता के महान दायित्व की बात करते कहना चाहा है कि यथार्थ से हम परिचित होते हैं किन्तु उस पर बोलने या विरोध करने से हम सभी कतराते हैं। धूमिल का मोची इसी सच्चाई की परतें उधारता जाता है। इसीलिए कवि की चीख और चुप्पी दोनों व्यवस्था की कमियों पर चोट करने और दयनीयता-सजगता के लिए आवाहन करती है।

इस कविता में कवि ने समाज के तीन स्तरों के लोगों का नंगा चित्र प्रस्तुत किया है। एक, जो आर्थिक तंगी से संघर्ष करता है, दूसरा, जो शोषक बनकर जीते हैं और तीसरे, जो शोषित हैं। विषमता से भरे समाज का यह नंगा चित्र है। कवि ने ऐसे समाज को महत्व देना चाहा है जो मानवता का पोषण करता हो। जनवादी कवि धूमिल ने यहाँ शोषण से भरी व्यवस्था में पिसते आम आदमी की पीड़ा और आक्रोश को वाणी दी है। कवि जानता है कि संसद और संसद को चलानेवाली राजनीतिक व्यवस्था में हर एक खद्दरधारी, टोपीवाली मनुष्यता का रक्त पी रहा है।